BA Part II (H) Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Paper III Sociology

ग्रामीण-नगरीय अनुबन्ध (Rural-Urban Linkages)

पर्याप्त अन्तर होने के बाद भी
ग्रामीण - नगरीय समुदायों में
परस्पर अन्तःक्रिया
वे एक दूसरे से पृथक नहीं हैं। इन दोनों में
होती है जिसके परिणामस्वरूप उनमें परिवर्तन होता रहता है।
ग्राम एवं नगर के पारस्परिक प्रभाव ने ग्रामीकरण, नगरीकरण
ग्राम्य - नगरीकरण, ग्राम - नगरीय नैरन्तर्य आदि प्रक्रियाओं का
प्रादुर्भाव हुआ। इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप ग्राम एवं
नगर की विशेषताओं का मिला जुला रूप प्रकट हुआ है।
औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ने तथा आर्थिक - सामाजिक विकास
ने ग्रामों की आत्म निर्भरता को समाप्त किया है। जबकि
कच्चे माल के लिए नगर ग्रामों पर निर्भर हैं। नगरों
की प्रबलता और वहां उपलब्ध साधनों की विपुलता ने
ग्रामवासियों को नगरों की ओर आकर्षित किया है।
ग्रामीणों का नगरीकरण हो रहा है। ग्राम एवं नगर
के सम्पर्क और अन्तः क्रिया के परिणाम स्वरूप एक
समन्वयपूर्ण अवस्था उत्पन्न हो जाती है जिसमें ग्रामीण

एवं नगरीय विशेषताओं की स्पष्ट उपस्थिति देखी जा सकती है। बड़े-बड़े नगरों के चारों ओर आस-पास बसे उपनगरों में दोनों का मिश्रित जीवन देखने को मिलेगा। नगर के लोग नगर से दूर खुली हवा में अपने बंगले बनाते हैं वे बंगलों में बगीचा लगाकर प्राकृतिक वातावरण प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। इन बंगलों में सभी आधुनिक सुख सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। इसमें निवास करने वाले लोग नगरीय व्यवसाय पर निर्भर रहते हैं। आज नगरीकृत जीवन पूर्णनगरीय न होकर नगरीय जीवन से प्रभावित ग्रामीण जीवन है।

नगरीकृत जीवन ग्रामों में भी देखी जा सकता है। नगरों की समृद्धि से अधिकाधिक नगरीकरण होने पर ही ग्राम-नगरीकरण की प्रक्रिया निर्भर है। नगरों में स्थापित उद्योगों में काम करने वाले लोगों को ~~करने के स्थान~~ ग्राम-नगरों के विस्तृत क्षेत्र में बसने पर इनका विस्तार एवं विकास का क्षेत्र विशाल हो जाएगा। ग्राम-नगरीकरण के कारण नगरीय संस्कृति का विस्तार होता है। महानगरीय सभ्यता और संस्कृति अपना वर्चस्व स्थापित कर लेते हैं और महानगरीय गांव महानगरीय संस्कृति के अंग बन जाते हैं।